गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस से उद्धृत ...

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥
(रामचरितमानस, १/ सोरठा ५)

मैं गुरु के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ, जो कृपा के सागर और नर रूप में श्रीहरि हैं। जिनके वचन महामोह रूपी घने अन्धकार के नाश हेतु सूर्य की किरणों के समान हैं।

I bow to the lotus feet of my Guru, who is an ocean of mercy. He is none other than Shri Hari himself in human form, and whose words are sunbeams as it were for dispersing the darkness in the form of gross ignorance.

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ॥
दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग उर आवइ जासू ॥
(रामचरितमानस, १/५/३)

श्री गुरु के चरण-नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण से हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाला है। वह जिसके हृदयमें आ जाता है, वह भाग्यशाली है।

The splendour of gems in the form of nails on the feet of the Shri Guru unfolds divine vision in the heart by their remembrance. The light disperses the shades of ignorance. Those are highly blessed in whose heart it shines.

उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥
(रामचरितमानस, १/५/४)

उसके हृदय में आते ही हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसार रूपी रात्रि के दोष-दुःख मिट जाते हैं। श्रीरामचरित्र रूपी मणि और माणिक्य, गुप्त और प्रकट रूप में, जो जहाँ जिस खान में हैं, सब दिखायी पड़ने लगते हैं।

With its very appearance, the bright eyes of the mind get opened, and the evils and sufferings of the mundane night disappear. The stories of Shri Rama, both apparent and hidden, become visible in the form of gems and rubies.

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥
(रामचरितमानस, १/ दोहा १)

जैसे सिद्धाञ्जन को नेत्रों में लगाकर साधक, सिद्ध और सुजान पर्वतों, वनों और पृथ्वी के अन्दर कौतुक से देखते हैं ।

For instance, by applying to the eyes the miraculous salve known by the name of Siddhanjana strivers, adepts as well as men of wisdom easily discover a host of mines on hill-tops, in the midst of forests and in the bowels of the earth.